International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.newresearchjournal.com/academic
Volume 1; Issue 2; February 2016; Page No. 60-61

सुशीला टाकभौरे के "संघर्ष" कहानी संग्रह में दलितों की सामाजिक चेतना

पूजा रानी

एम.फिल.छात्रा, दक्षिर्िभारत हिन्दी, प्रचार सभा, मद्रास

प्रस्तावना

सुशीला टाकभौरे जी का व्यक्तित्व :–

डॉ0 सुशीला टाकभौरे एक दलित महिला लेखिका हैं। एक तो दलित ऊपर से महिला। उनका दर्द भली भाँति समझा जा सकता है। उन्होंने अध्यापन के साथ–साथ कई समाज–सेवी संस्थओं के साथ भी काम किया है। लेखिका डॉ0 अम्बेडकर को अपने मार्गदर्शक के रूप में ज्ञान का सूरज मानती है।

सुशीला जी का मानना है कि मनुवादियों की जीवन शैली में दलित समाज का विकास कभी भी सम्भव नहीं। सुशीला जी मूर्ति पूजा का खंडन करती है। वह उन परम्पराओं को स्वीकार नहीं करना चाहती जो एक स्त्री को गुलाम बनाये रखने का मार्ग प्रशस्त करती है।

सुशीला जी का मानना है कि स्त्री का अस्तित्व स्वतन्त्र होना चाहिये। लेखिका ब्राह्मण संस्कृति के प्रस्तावकों के प्रचारकों को दुष्मन करार देती हैं। लेखिका शोषक समाज से कभी भी दलितों के भले की उम्मीद नहीं करती।

लेखिका मानती हैं कि आजादी के लिए संघर्ष का रास्ता अख्तियार करना पड़ता है। डॉ0 सुशीला टाकभौरे जी डॉ0 अम्बेडकर के साथ उन चेतना सरणी में योगदान देने वाले गौतम बुद्ध, कबीर, जोतिबा फूले, सावित्री बाई फूले आदि का स्मरण कभी नहीं भूलती। सुशीला जी आपने आपको इन सबका कृतज्ञ मानती हैं। इसलिए इन सब विद्वानों से प्रेरित होकर सुशीला जी ने दलितों की आवाज को अपनी रचनाओं, काव्यों और कहानियों आदि के माध्यम से उजागर करने का बड़ा ही सजग प्रयत्न किया है।

परिभाषाएँ :–

1. कबीर :–

क) ऊंचे कुल का जनमिया जे करनी ऊँच न होए।
सुबरन कलस सुरा भरा साद्दु निंदत सोय।। [1]

2. जोतिबा फूले :–

क) भारत में राष्ट्रीयता की भावना का विकास तब तक नहीं होगा, जब तक खान–पान एवं वैवाहिक सम्बन्धों पर जातीय बंधन बने रहेंगे।

ख) दबे कुचले वगों में बुद्धिमता, नैतिकता, प्रगति एवं समृद्धि का विकास करने हेतु समाज में शिक्षा की आवश्यकता सर्वाधिक है।। [2]

3. ओम प्रकाश वाल्मीकि :–

बकौल लेखक: दलित जीवन की पीड़ाएं असहनीय और अनुभव दग्ध हैं। ऐसे अनुभव जो साहित्यिक अभिव्यक्तियों में स्थान नहीं पा सकें। एक ऐसी समाज–व्यवस्था में हमने सांस ली है जो बेहद क्रूर और अमानवीय है। दलितों के प्रति असंवेदनशील भी।। [3]

4. गौतम बुद्ध :–

मनुष्य जन्म से नहीं बल्कि कर्म से शुद्र या ब्राह्मण होता है। [4]

दलितों की समाजिक चेतना का वर्णन

सुशीला टाकभौरे जी के "संघर्ष" कहानी संग्रह में दलितों की दयनीय समाजिक स्थिति का वर्णन किया गया है। समाज की बनावट के आरम्भ में ही वर्ण भेद अथवा जाति भेद का प्रचलन आरम्भ हो चुका था। "संघर्ष" कहानी में शंकर नामक बाल पात्र को कोई भी शरारत करने पर गांव के लोगों से जो गालियां सुननी पड़ती थी। प्रायः वे गालियां जाति को निशाना बनाकर निकाली जाती थी। एक बार शंकर ने राजा राम के बगीचे से आम तोड़ लिए। उसे रंगे हाथों पकड़कर राजा राम ने चिल्लाते हुए कहा – "स्कूल में जाकर यही सीखता है ठहर जा.... तेरे मास्टर को जाकर बताऊंगा। अपनी जाति औकात की सीमा में नहीं रहता [5]

राजा राम ने शंकर के घर पर उसकी शिकायत की तो शंकर के पिता ने उसकी खूब पिटाई की। मार खाकर शंकर रोने लगा। अपने बच्चे को रोता देखकर पिता का मन भी दुखी हो गया। वे गुस्से से बोले– "बच्चा है ..... बच्चे धूम करते ही हैं। मगर लोगों को हमारा ही बच्चा बुरा लगता है। न जाने लोग हमारे ही पीछे क्यों पड़े रहते हैं? जहां देखो जात–पात की बात करके हमें नीचा दिखाते रहते हैं। जैसे हमारी कोई इज्जत ही नहीं है?"... [6]

"जन्मदिन" कहानी में लेखिका ने बताया है कि जाति व्यवस्था में अछूत माने गए दलित भंगियों को भी बस्तियों से बाहर बसाया गया है। इनके मोहल्लों के आसपास स्वर्ण जाति के घर नहीं है। इस कहानी में वर्णन है कि दलितों को समाज में मैला सफाई का काम दिया जाता है। वे लोग मोहल्लों की कच्ची संडासो की सफाई करके मल मूत्र से बड़े–बड़े डले या टोकने भरते हैं।

"जन्मदिन" कहानी में मुन्ना ने सहानुभूति के साथ कहा–बेचारा गोरे लाल, कैसे उठाता होगा मलमूत्र के टोकने? [7]

फिर प्रेम ने हंसकर कहा– गोरे लाल, ऐसा कौन सा बड़ा काम करता है? नाली के किनारे गाड़ी खड़ी करता है, नाक और मुँह कपड़े से लपेटकर, मल–मूत्र के भारी टोकने अपने कंद्दों पर उठाता है। टोकने उठाते समय गंदगी हाथ पैर और कंधो पर लग ही जाती है तो भी क्या करें? काम ही ऐसा है [8]....

प्रेम भैया ने अपनी बात आगे बढ़ो हुए आगे बताया–ऊपर तक भरा टोकना हाथों से पकड़ना पड़ता है। बदबू उनके साथ गंधाती रहती है। टोकने से सिर और कंधों पर मलमूत्र टपकता रहता है। हाथ में मैले में सन जाते हैं और कभी–कभी अनजाने में वही हाथ मुँह को भी लग जाते हैं। [9]

मुन्ना आगे नहीं सुन सका। वह गुस्से के साथ चीख पड़ा। उसने प्रेम को धिक्कारते हुए कहा– बस करो। शर्म नहीं आती तुम्हें। इतनी गंदगी की बातें, इतनी आसानी से हंसते हुए तुम कैसे कह लेते हो? कैसे जीते हो? तुम ऐसा नरक का जीवन। [10]

'सिलिया' कहानी में जब खेल–कूद की प्रतियोगिता के दौरान सिलिया को अपनी सहेली हेमलता के साथ उसकी बहन के ससुराल में कुछ देर आराम करने के लिए जाना पड़ता है तो उसकी बहन की सास ने हेमलता को पानी का गिलास दिया। दूसरा गिलास हाथ में लेकर वह सिलिया के बारे में पूछने लगी– कौन है? किसकी बेटी है? कौन ठाकुर है? [11]

मौसी जी ने हेमलता से सिलिया की जाति पूछी। हेमलता ने धीरे से बता दिया। मौसी जी जाति का नाम सुनकर चौंक गई। तब मौसी जी ने अतिरिक्त प्रेम जताते हुए कहा– 'कोई बात नहीं बेटी, हमारा भैया तुम्हें साइकिल पर बिठाके वहां छोड़ आएगा–' [12]

मौसी जानती थी कि सिलिया को प्यास लगी है, फिर भी जाति का नाम सुनकर वह पानी का गिलास वापिस ले गई। सिलिया को प्यास लगी थी और वह मौसी से पानी मांगने की हिम्मत नहीं कर सकी। [13]

'बदला' कहानी में मुख्य पात्र कल्लू जो कि एक छात्र है और खेल–खेल में उच्च वर्ण के सहपाठियों से झगड़ा हो जाने पर उन सहपाठियों के परिवार वाले उसके घर पर आकर उसकी नानी से कहते हैं– "छौआ डोकरी, अपने नाती को बहार निकाल। हम अभी उसका भुर्ता बना देंगे।....हमारे लड़कों पर हाथ उठाने की उसने हिम्मत कैसे की?..... क्या तुम अपनी जात और औकात भूल गये..... ?" [14]

"छौआ माँ" कहानी में छौआ माँ दलित जाति से सम्बन्धित एक ऐसी बूढ़ी स्त्री है जो कि गांव में दाई का काम करती है। एक बार वह गांव से बाहर गई हुई थी। गांव वालों के द्वारा जबरदस्ती उसकी लड़की तुलसा को दाईपने का काम करने के लिए विवश किया। लड़की ने बहुत कहा कि उसे दाईपने का काम नहीं मालूम। परन्तु गांव वालों को विश्वास था कि दाई माँ नहीं तो उनकी बेटी ही यह काम संभालेगी। बस, फिर तो वे तुलसा के पीछे लग गए– "बाई तुम अभी चलो...तुम्हें चलना ही पड़ेगा....आज तो ये काम तुझे ही संभालना पड़ेगा.... ।" [15]

वे लोग गुस्से से तुलसा को डांटने लगे और अपना दबका बताने लगे। ऐसे कैसे जायेगी... चलना पड़ेगा। दाई की बेटी को दाईपना नहीं मालूम.... । ऐसा कैसे हो सकता है। [16]

"नई राह की खोज" कहानी के माध्यम से लेखिका ने यह भी दिखाने का प्रयास किया है कि समाज के इस पिछड़े वर्ग में वैसे भी पैतृक रोजगार के बदले कोई दूसरा रोजगार अपनाने की बात नहीं सोची जा सकती। ऐसा ही कहानी के पात्र लालचन्द के साथ भी हुआ।

घर में पढ़ाई का माहौल न होने के कारण वे आर्थिक तंगी के कारण लालू सभी विषयों में पीछे था। लालू की पढ़ाई का हाल देखकर शिक्षक उसे पीटने लगे तथा लालू स्कूल से भागने लगा। लालू का स्कूल से नाम कट गया। घर में दो चार दिन की पिटाई के साथ ही लालू की पढ़ाई खत्म हो गई।

आखिर हुआ वही, एक दिन सफाई मजदूरों की लिस्ट में लालू का नाम भी आ गया। लालू अब विचार करने लगा –"क्या जिंदगी इसी तरह बार–बार दोहराई जाती रहेगी?" क्या एक दिन उसका बेटा भी सफाई मजदूरों की लिस्ट में आ जायेगा? जैसा कि वह आ गया है। ऐसा कब तक चलेगा? कहीं न कहीं और कभी न कभी इस परम्परा को तोड़ना ही पड़ेगा।.... [17]

"दमदार" कहानी में भी जग्गू पहलवान द्वारा पागल गरीब औरत पर किये गए अत्याचार व मारपीट को दर्शाया गया है एक दिन दुर्भाग्य से पागल औरत के सामने से जग्गू पहलवान निकला। पागल औरत ने जग्गू को बंदर की तरह दाँत दिखाये। पागल औरत की हरकतें देखकर कुछ लोग हँस दिये। जग्गू ने लोगों को हँसते देखा और इसे अपना अमपान समझा।

जग्गू ने पागल औरत के बाल पकड़ लिये। जग्गू ने उसे घसीटना शुरू कर दिया और लात जूतों से उसे पीटा। असहाय गरीब पागल औरत के लिये सबके मन में सहानुभूति थी। कुछ लोगों ने जग्गू पहलवान को समझाने की कोशिश की– "भैया जाने दो, पागल है, औरत है....जाने दो।" मगर वह नहीं माना। [18]

एक बार रामू लाल की नाबालिग लड़की प्रेमलता घर के खुले बरामदे में खड़ी थी। जग्गू पहलवान के लिये इतना ही काफी था। वह चीते के समान आगे बढ़ा। लड़की कुछ समझ नहीं पाई जग्गू ने पल भर में उसका हाथ पकड़ा और खींच कर सड़क तक ले आया। लड़की डर गई। वह चीखने लगी।

लड़की की चीख सुनकर लोग घरों से बाहर आ गये। जग्गू ने सभी की तरफ देखा, फिर लड़की की तरफ देखा– "लड़की नासमझ है, बच्ची है–" यह सोचकर अथवा पता नहीं क्या सोचकर उसने लड़की का हाथ छोड़ दिया। लड़की रोती हुई अपने घर चली गई। [19]

लेखिका सुशीला टाकभौरे "संघर्ष" कहानी संग्रह के माध्यम से दलित, शोषित, पीड़ित वर्ग की दयनीय स्थिति को उजागर करना चाहती है क्योंकि ये कहानियाँ दलित व शोषित वर्ग के लोगों के जीवन के सच्चे चित्र व्यक्त करती है।

सुशीला जी का मानना है कि डॉ0 अम्बेडकर जी ने शिक्षा प्राप्ति एवं अच्छे विचारों से अपने समुदायों को बेहतर स्थान दिलवाने के अथक प्रयास किये। अतः दलित समुदाय एवं इनके संघर्ष को सही दिशा मिलने पर ही समाज में इनकी दर्दनाक स्थिति को सुधारा जा सकता है। अम्बेडकरवादी विचारधारा शोषित एवं पीड़ित समाज के लिए जागषति का संदेश है।

डॉ0 सुशीला टाकभौरे जी भी चाहती है कि दलित एवं शोषित वर्ग तक अम्बेडकरवादी विचारों का संदेश पहुंचे, वे भी जागृति, प्रगति और परिवर्तन के साथ समता–सम्मान का जीवन जीयें, अपना वर्तमान अच्छा बनाकर आने वाली पीढ़ियों के वर्तमान और भविष्य के लिये विचार करें।

संदर्भ सूची :–

1. दास कबीर, सामाजिक चेतना संबन्धी विचार
2. फूले जोतिबा, वही
3. वाल्मीकि प्रकाश ओम, पुस्तक 'जूठन', दलित चेतना सम्बन्धी विचार
4. बुद्ध गौतम, सामाजिक चेतना संबन्धी विचार
5. टाकभौरे सुशीला, "संघर्ष" कहानी संग्रह, पृष्ठ–7
6. वही, पृष्ठ–9
7. वही, पृष्ठ–36
8. वही,
9. वही, पृष्ठ–37
10. वही
11. वही, पृष्ठ–47
12. वही
13. वही
14. वही, पृष्ठ–55
15. वही, पृष्ठ–71
16. वही
17. वही, पृष्ठ–71
18. वही, पृष्ठ–131
19. वही, पृष्ठ–132